P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 VOL-5* ISSUE-3* November- 2017
E: ISSN NO.: 2349-980X **Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika**

राजस्थान राज्य पथ परिवहन निगम में सामग्री प्रबन्ध : एक विश्लेषणात्मक अध्ययन

महेन्द्र कुमार खारड़िया
व्याख्याता,
लेखा एवं व्यावसायिकी
सांख्यिकी विभाग,
राजकीय लोहिया महाविद्यालय,
चूरू, राजस्थान

सारांश

राजस्थान राज्य पथ परिवहन निगम यात्री परिवहन के क्षेत्र में एक अग्रणी निगम है। निगम के द्वारा अपने परिवहन कार्य के सुचारू रूप से संचालन के लिए सामग्री प्रबन्ध विभाग का गठन किया है जो कि यात्री सेवाओं के सफल संचालन का मुख्य आधार है। परिवहन निगम के द्वारा सामग्री नियन्त्रण के लिए प्रचलित तकनीकों का प्रयोग किया जा रहा है परन्तु अधिकांश सामग्री नियन्त्रण तकनीकें व्यापारिक उपक्रमों से सम्बन्धित होने के कारण पूर्ण रूप से प्रयोग योग्य नहीं है। निगम के द्वारा सामग्री श्रेणीकरण, वर्गीकरण और मूल्यांकन जैसी क्रियाओं पर बल दिया गया है परन्तु निगम की प्रकृति यात्री सेवा प्रदान होने के कारण तथा अनावश्यक राजनीतिक हस्तक्षेप की प्रकृति ने सामग्री नियन्त्रण के उद्देश्यों की पूर्ति में यथाचित सफलता सन्देहासत्मक है। अतः राजस्थान राज्य पथ परिवहन निगम के द्वारा सामग्री प्रबन्ध के क्षेत्र में अपेक्षित सुधारों की काफी गुंजाइश है।

मुख्य शब्द : सामग्री नियन्त्रण, श्रेणीकरण, वर्गीकरण, ए.बी.सी. विश्लेषण, एच.एम. एल. विश्लेषण, मूल्य विश्लेषण, लीडटाईम ई.ओ.क्यू.।

प्रस्तावना

राज्य में यात्री परिवहन के क्षेत्र में राजस्थान राज्य पथ परिवहन निगम का योगदान महत्वपूर्ण है। निगम के द्वारा न लाभ न हानि के सिद्धान्त का अनुसरण करते हुए न केवल राज्य में बल्कि देश में अन्य राज्यों में भी यात्री सेवाऐं बहुत ही सुगम, मितव्ययी और सुविधाजनक तरीके से प्रदान की जा रही हैं। निगम के इस सफल संचालन के पीछे निगम का सामग्री प्रबन्ध का योगदान माना जाता है। निगम ने यातायात सेवाओं की नियमितता के लिए अपने यहां अलग से एक सामग्री प्रबन्ध नियन्त्रण विभाग की स्थापना कर रखी है। यह विभाग निगम में सामग्री प्रबन्ध की प्रबन्ध व्यवस्था के प्रति पूर्णतः उत्तरदायी है और स्कन्ध नियन्त्रण के उद्देश्यों की पूर्ति को सम्भव बनाता है।[1] निगम के द्वारा सामग्री नियन्त्रण के लिए मुख्य कार्यकारी अधिकारी की नियुक्ति की गई, जो कि उच्च प्रबन्धन का एक महत्वपूर्ण अधिकारी है।

अध्ययन के उद्देश्य

राजस्थान राज्य पथ परिवहन निगम यात्री परिवहन के क्षेत्र में एक अग्रणी निगम में सामग्री प्रबन्ध और नियन्त्रण की महत्वपूर्ण आवश्यकता है। अतः इस तथ्य को ध्यान में रखते हुए प्रस्तुत शोध लेख में निम्नलिखित उद्देश्य प्रस्तावित हैं :–

1. निगम में प्रयुक्त कार्यशील पूंजी की संरचना और प्रयोग का प्रभावी विश्लेषण करना।
2. स्कन्ध की क्रय लागतों और स्कन्ध लागतों का विश्लेषण करके उन्हें न्यूनतम बनाये रखना।
3. निगम में स्कन्ध समाप्ति से एवं समयबद्ध आपूर्ति नहीं होने से होने वाली हानि की अवसर लागतों का विश्लेषण करना।
4. यात्री सुविधाओं की गुणवत्ता में सामग्री नियन्त्रण के प्रभावों का मूल्यांकन करना।
5. निगम में सामग्री के अभाव में ब्रेक डाउन की हानि को न्यूनतम करना।
6. निगम में सामग्री छीजत, गबन और चोरी की स्थिति का विश्लेषण करके नियन्त्रण करना।

साहित्यावलोकन

इस कार्य में प्रयुक्त की गयी सूचनाओं और संमकों के प्रयोग और विश्लेषण पर निर्भर करता है। इतना ही नहीं एक नवीन शोध कार्य की रूपरेखा

का आयोजन करने से पहले सम्बन्धित विषय पर उपलब्ध शोध साहित्य का अवलोकन करना अति आवश्यक होता है। क्योंकि शोध साहित्य का अवलो एक शोधकर्ता को इस बात की व्यापक और सही जानकारी प्रदान करता है कि उसे शोध कार्य हेतु किस प्रकार की सूचनाओं, प्रविधियों और संमकों की आवश्यकता है। इसलिए शोध साहित्य का अवलोकन करना एक शोध कार्य की प्राथमिक आवश्यकता है।

सामग्री प्रबन्ध एवं नियन्त्रण व्यवस्था भी वित्तीय प्रबन्ध के कुशल संचालन का आधार मानी जाती है। डॉ. वी. एस. मांठ के द्वारा शोध उपाधी के लिए राजस्थान विश्वविद्यालय में प्रस्तुत शोध ग्रन्थ ''राजस्थान राज्य विद्युत निगम में सामग्री प्रबन्ध का अध्ययन'' का विश्लेषण बताता है कि राजस्थान सरकार द्वारा स्थापित लोक उपक्रमों, जिनमें राजस्थान राज्य पथ परिवहन निगम भी शामिल है, में सामग्री प्रबन्ध के वैज्ञानिक और वाणिज्यिक सिद्धान्तों के अनुसरण का अभाव है। इतना ही नहीं स्कन्ध नियन्त्रण की प्रचलित विधियों का निगम द्वारा अनुसरण नहीं किया जा रहा है, जिसके कारण कई पर अति स्टॉक और कमी पर न्यून स्टॉक की समस्या बनी हुई है और सामग्री खरीद की कोई नियमित और समयबद्ध प्रक्रिया नहीं है, जिसके कारण निगम लगातार हानि उठा रहा है।[2]

डॉ. आर. एल. स्वामी ने अपने शोध ग्रन्थ ''राजस्थान राज्य पथ परिवहन निगम में कार्यशील पूंजी का एक विश्लेषणात्मक अध्ययन – झुंझुनूं एवं सीकर जिले का तुलनात्मक विवेचन'' जो कि सिंघानियाँ विश्वविद्यालय में शोध उपाधि हेतु प्रस्तुत किया गया है। इस शोध ग्रन्थ में निगम में कार्यशील पूँजी की आवश्यकता प्रभावित करने वाले तत्वों एवं पिछले दशक की अवधि में कार्यशील पूँजी की मात्रा का व्यापक विश्लेषण किया गया है। शोध ग्रन्थ में बताया गया है कि कार्यशील पूंजी की कमी के कारण निगम की दैनिक संचालन व्यवस्था अव्यवस्थित है। इतना ही नहीं कार्यशील पूंजी की कुछ मदों में आवश्यकता से अधिक तरलता की स्थिति विद्यमान है, जो कि ब्याज प्रभार को पैदा करती है। कार्यशील के अनुकुलतम स्तर का निर्धारण नहीं किया गया है। परिणास्वरूप कार्यशील पूंजी में स्कन्ध में अत्यधिक विनियोजन होना बताया गया है। इस शोध प्रारूप में कार्यशील पूंजी को प्रभावी प्रबन्ध हेतु लिये गये सुझाव बहुत ही सार्थक हैं।[3]

प्रो. मधुलिका चौधरी ने अपने शोध ग्रन्थ ''भारतीय जीवन बीमा निगम में वित्त नियन्त्रण का एक विश्लेषणात्मक अध्ययन'' में लोक उपक्रमों में वित्त नियन्त्रण की आवश्यकता को अति आवश्यक माना है। इस शोध ग्रन्थ में बीमा निगम की कार्यप्रणाली को विश्लेषित करते हुए इस तथ्य को व्यक्त किया है कि लागत नियन्त्रण के माध्यम से विनियोग पर प्रत्याय दर को बढ़ाया जा सकता है तथा संचित कोषों का लाभदायक विनियोजन भी लोक उपक्रमों में लाभदायकता को बढ़ाता है। अतः राजस्थान राज्य पथ परिवहन निगम की भी भारतीय जीवन बीमा निगम के सिद्धान्तों का प्रयोग करके विनियोजन का लाभदायक प्रयोग प्रोत्साहित करना चाहिए।[4]

डॉ. बंशीधर नैनावत ने अपने शोध ग्रन्थ ''भारत में लोक उपक्रमों में संचालनात्मक कार्यकुशलता ''राजस्थान राज्य पथ परिवहन निगम का एक अध्ययन)'' में बताया है कि एक निगम की संचालनात्मक कार्यकुशलता उसकी सफलता का मुख्य आधार है। राजस्थान राज्य पथ परिवहन निगम की इस कार्यकुशलता का वित्तीय, सामाजिक, सांस्कृतिक और कार्मिक आधार पर मूल्यांकन करते हुये डॉ. नैनावत ने लिखा है कि निगम की स्थापना से ही कार्यकुशलता का स्तर सन्तोषजनक नहीं रहा है और विभिन्न कारणों से निगम की कार्यकुशलता लगातार गिरती जा रही है, जिसके कारण निगम की लाभदायकता में अप्रत्याशित कमी हुई है। अतः निगम को आधुनिक प्रबन्ध प्रविधियों का प्रयोग करके इसे संचालनात्मक कार्यकुशलता में सुधारों को प्रोत्साहित करना चाहिए।[5]

प्रो. टी. आर. कुन्डू ने अपने शोध लेख ''हरियाणा राज्य पथ परिवहन निगम में स्कन्ध नियन्त्रण का एक विश्लेषणात्मक अध्ययन'' में बताया है कि वाणिज्य उपक्रमों की भांति राज्य पथ परिवहन निगमों में भी सामग्री नियन्त्रण की अति आवश्यकता है। परन्तु यह निगम सेवा प्रदान करने वाला उपक्रम है। अतः इस निगम में स्कन्ध नियन्त्रण की विभिन्न तकनीकों का प्रयोग व्यापार उपक्रमों के भांति नहीं किया गया है। निगम में सामग्री नियन्त्रण की चुनिन्दा तकनीकों को ही अपनाया गया है। इतना ही नहीं स्कन्ध नियन्त्रण की वैज्ञानिक पद्धति के रूप में आर्थिक आदेश मात्रा,'अ ब स' वर्गीकरण अपवाद द्वारा प्रबन्ध पद्धति आदि को काम में लिया गया है परन्तु सामग्री नियन्त्रण की समयबद्ध और व्यवस्थित व्यवस्था न होने के कारण निगम सामग्री अभाव की समस्या के कारण अपनी नियमित गतिविधियों के संचालन में असफल है।[6]

व्यापारिक उपक्रमों की भांति परिवहन निगमों के संचालन में लागत नियन्त्रण करना अति आवश्यक है। क्योंकि लागत नियन्त्रण उन उपक्रमों की कार्यक्षमता को बढ़ाता है और लाभदायकता में वृद्धि करता है। इस तथ्य को बताते हुए प्रो. डी. एस. राठौड़ ने अपने लेख ''राजस्थान राज्य पथ परिवहन निगम में लागत नियन्त्रण का एक अध्ययन'' बताया है कि इस परिवहन निगम के द्वारा यात्री सेवायें प्रदान की जाती हैं, जो कि न लाभ न हानि के सिद्धान्त पर आधारित है। इतना ही नहीं निगम के द्वारा यात्री सेवाओं का संचालन किया जाता है उसकी संचालन लागत काफी ऊँची है, जिसके कारण निगम की लाभदायकता घटती जा रही है। अतः इन संचालन लागतों को नियन्त्रित करना अति आवश्यक है।[7]

डॉ. राजीव कुमार सक्सेना ने अपने शोध ग्रन्थ ''मैट्रो सिटी में यातायात समस्या (राजस्थान राज्य पथ परिवहन निगम का एक अध्ययन)'' में बताया है कि जयपुर जैसे बड़े शहरों में परिवहन निगम द्वारा यात्री सुविधाओं हेतु बसों का संचालन किया जा रहा है। इन बसों के संचालन की लागत ज्यादा है, इसके साथ ही साथ इन बसों में दुर्घटना दर अधिक होने के कारण निगम को बीमा क्षतिपूर्ति के रूप में काफी राशि चुकानी

P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 VOL-5* ISSUE-3* November- 2017
E: ISSN NO.: 2349-980X **Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika**

पड़ रही है। निजी बसों से कड़ी प्रतिस्पर्द्धा में निगम के लिए एक बड़ी चुनौती है।[8]

डॉ. महेश शर्मा ने अपने शोध ग्रन्थ ''राजस्थान में लोक सेवा उपक्रम में मानवीय संसाधन विकास (राजस्थान राज्य पथ परिवहन निगम का एक विशेष अध्ययन)'' में मानवीय संसाधनों की आवश्यकता और उसके प्रबन्ध की स्थिति को विश्लेषित किया है। निगम के द्वारा अलग से मानवीय संसाधनों के विकास हेतु विभाग की स्थापना की गई है। यह विभाग मानवीय संसाधनों के विकास के लिए लगातार आधुनिक प्रबन्धकीय विधियों को अपनाकर निगम में आदर्श कर्मचारी की भावना को प्रोत्साहित कर रहा है तथा साथ ही साथ कर्मचारियों को उचित प्रशिक्षण देकर निगम के प्रति उत्तरदायी बना रहा है। परन्तु निगम के मानवीय संसाधनों के विकास हेतु आधुनिक सुविधाएं उपलब्ध नहीं है तथा कर्मचारी भी उपलब्ध सुविधाओं का प्रयोग करने के प्रति उदासीन हैं।[9]

परिकल्पना

राजस्थान राज्य पथ परिवहन निगम में सामग्री प्रबन्ध और नियन्त्रण की समस्या के अध्ययन और विश्लेषण करने के लिए निम्नलिखित परिकल्पनाएं प्रस्तावित हैं :–

1. ''राजस्थान राज्य पथ परिवहन निगम के द्वारा प्रयुक्त सामग्री प्रबन्ध एवं नियन्त्रण व्यवस्था तथा यात्री सेवाओं के मध्य धनात्मक सम्बन्ध हैं।''
2. ''निगम के द्वारा सामग्री नियन्त्रण के लिए प्रयुक्त तकनीक परम्परागत तथा दूषित हैं।''
3. ''निगम के द्वारा सामग्री नियन्त्रण के लिए अपनायी गई नियन्त्रण तकनीक, राजनैतिक हस्तक्षेप और कर्मचारियों की लापरवाही के कारण अधिक प्रभावी नहीं है।''

शोध संरचना

राजस्थान राज्य पथ परिवहन निगम में सामग्री नियन्त्रण और प्रबन्ध की स्थिति का मूल्यांकन करने के लिए प्रस्तुत इस शोध लेख में संमक विश्लेषण के लिए विभिन्न स्रोतों से सूचना प्राप्ति के लिए प्राथमिक और द्वितीयक समंकों का प्रयोग किया गया है। प्राथमिक संमको को प्राप्त करने के लिए निगम के अधिकारियों और कर्मचारियों से व्यक्तिगत साक्षात्कार, प्रश्नावली एवं अनुसूची विधियों का यथा सम्भव प्रयोग किया गया है। द्वितीयक संमको एवं सूचनाओं की प्राप्ति के लिए निगम के विभिन्न वित्तीय वर्षों के वार्षिक प्रतिवेदनों, अंकेक्षणों रिपोर्टों, लेखा विवरण पत्रों एवं पूर्व में किये गये शोध कार्यों का प्रयोग किया गया है। शोध कार्य की प्रमाणिकता को बनाये रखने के लिए सांख्यिकाएँ प्रविधियों का भी यथा सम्भव प्रयोग किया गया है।

राजस्थान राज्य पथ परिवहन निगम में सामग्री क्रय की प्रक्रिया

राजस्थान राज्य पथ परिवहन निगम सरकार द्वारा स्थापित एक सार्वजनिक उपक्रम है। इस उपक्रम में सामग्री की आवश्यकता और उसकी खरीद एक निश्चित औपचारिक प्रक्रिया के माध्यम से होती है। सामान्यतः सामग्री खरीद के अधिकार दिये गये हैं वे इन अधिकार सीमाओं को ध्यान में रखते हुए निविदा प्रक्रिया के माध्यम से सामग्री की खरीद करते हैं। राजस्थान राज्य पथ परिवहन निगम में सामग्री क्रय के अधिकार प्रत्यायोजन को निम्नलिखित तालिका द्वारा प्रस्तुत किया गया है[10] –

तालिका – 01

भण्डार सामग्री क्रय करने के प्रत्येक मामले में वित्तीय सीमा

क्र.सं.	विवरण	कार्यकारी प्रबन्धक (क्रय / भण्डार)	महा प्रबन्धक (क्रय / भण्डार)	प्रबन्धक निदेशक	क्रय मण्डल	अध्यक्ष
1	एक निविदा पर खरीद	5000	10000	20000	50000	100000
2	क्रय नीति के पैरा संख्या 2.00 से 2.09 तक में वर्णित अधिकृत डीलरों से खरीद	10000	20000	50000	100000	200000
3.	क्रय नीति के पैरा संख्या 2.00 से 2.09 तक वर्णित ऐजेन्सियों से खरीद	20000	50000	100000	पूर्ण शक्तियां	किसी भी विवाद में पूर्ण शक्तियां
4.	स्टील ऑथोरिटी ऑफ इण्डिया से खरीद	100000	पूर्ण शक्तियां	किसी भी विवाद में पूर्ण शक्तियां	–	–
5.	राजस्थान राज्य के उन उद्यमियों से खरीद जिन्हें नये विकास हेतु प्रोत्साहित किया गया है।	10000 उपयोग करने वाले विभाग के अध्यक्ष के परामर्श से				

वित्तीय सलाहकार के परामर्श से।

उपरोक्त समस्त खरीद वित्तीय सलाहकार के परामर्श के आधार पर निगम के द्वारा की जाती है।

निगम में सामग्री नियन्त्रण

राजस्थान राज्य पथ परिवहन निगम में सामग्री प्रबन्ध एवं नियन्त्रण के विभिन्न सिद्धान्तों का अनुसरण करने का प्रयास किया गया है। यह निगम यात्री सेवा प्रदान करने का प्रयास हेतु स्थापित किया गया है, जिसके कारण निगम व्यापारिक संस्थाओं की तरह सामग्री नियन्त्रण की सभी तकनीकों को काम में नहीं ले सकता

P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 VOL-5* ISSUE-3* November- 2017
E: ISSN NO.: 2349-980X **Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika**

है। सामान्यतः निगम के द्वारा सामग्री नियन्त्रण के लिए निम्नलिखित प्रक्रिया को अपनाया गया है।[11]

सामग्री का श्रेणीकरण

निगम में परिवहन सेवा के नियमित संचाल के लिए विभिन्न प्रकार की सामग्री खरीदी जाती है। इस सामग्री में दोहराव न हो तथा सामग्री की आसानी से पहचान हो सके इसके लिए सामग्री की श्रेणीकरण विधि को अपनाया गया है। श्रेणीकरण के लिए अलग–अलग तथा दोनों का मिश्रण कोड को सामग्री पहचान के लिए निगम के द्वारा इस कोड निर्धारण के लिए ब्रिज बनाम कोडाक व्यवस्था अपनाया गया है। सामग्री की अलग–अलग मदों के लिए अलग–अलग रंगों के कोड निर्धारित किये गये हैं।[12] निगम में सामग्री कोडिंग का कार्य स्टोर कीपर की देखरेख में किया जाता है। परन्तु देखने में यह आया है कि निगम में अपनाई गई कोडिंग व्यवस्था काफी पुरानी और अपूर्ण है, जिसमें सुधार की अधिक गुंजाइश है।

सामग्री वर्गीकरण

सामग्री नियन्त्रण व्यवस्था में सामग्री वर्गीकरण एक महत्वपूर्ण कार्य माना जाता है। राजस्थान राज्य पथ परिवहन के द्वारा सामग्री नियन्त्रण की प्रभावी व्यवस्था के लिए कई विधियों को आवश्यकता के अनुरूप काम में लिया गया है। जैसा कि निम्नलिखित तालिका से स्पष्ट है।[13]

तालिका – 02

सामग्री वर्गीकरण की विधियां उनका आधार और प्रयोग

क्र.सं.	वर्गीकरण तकनीक	आधार	मुख्य प्रयोग
1	ABC (Always better Control)	वार्षिक उपयोग के मूल्य के आधार पर	क्रय प्रबन्ध, निरीक्षण प्रबन्ध, स्टोर प्रबन्ध, स्कन्ध प्रबन्ध, सामग्री रखरखाव प्रबन्ध
2	HML (High Medium Low)	सामग्री के प्रति इकाई मूल्य के आधार पर	मुख्यतः क्रय प्रबन्ध पर नियन्त्रण
3	SDE (Scarce difficult eaxy to obtain)	क्रय के सम्बन्ध में अनुभव की गई समस्याओं के आधार	विलम्ब समय का विश्लेषण, क्रय व्यय रचना का निर्धारण व भण्डार व्यवस्था का निर्धारण
4	VED Vital Essential Desirable	अतिरिक्त पुर्जों के विश्लेषण के आधार पर	उत्पादन प्रक्रिया के सुचारू संचालन हेतु, बिना पुर्जों के भी उत्पादन कार्य चलाने में प्रयोग

तालिका – 03

राजस्थान राज्य पथ परिवहन में भण्डार सामग्री

वर्ष	लीलैण्ड समूह				टाटा समूह				प्रोपराईटरी समूह				जनरल एवं टूल्स समूह			
	प्रा.शेष	प्राप्तियां	उपभोग	अन्तिम शेष	प्रा.शेष	प्राप्तियां	उपभोग	अन्तिम शेष	प्रा.शेष	प्राप्तियां	उपभोग	अन्तिम शेष	प्रा.शेष	प्राप्तियां	उपभोग	अन्तिम शेष
2005-06	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-
2006-07	67.87	735.04	729.14	73.77	57.83	393.64	401.05	50.42	33.36	383.47	390.35	26.28	44.14	375.89	392.28	27.75
2007-08	73.77	898.16	914.21	57.72	50.42	498.54	506.89	42.07	26.28	463.16	467.29	22.15	27.75	339.79	329.44	38.10
2008-09	57.72	918.69	898.56	77.85	42.07	466.95	472.48	36.54	22.15	504.20	499.86	26.49	38.10	225.73	238.76	25.07
2009-10	77.85	838.51	825.62	90.74	36.54	440.78	445.73	31.59	26.49	549.60	543.84	32.25	25.07	284.97	265.37	44.67
2010-11	90.74	879.42	846.00	57.32	31.59	369.15	375.16	37.60	32.25	454.42	459.00	36.83	44.67	382.05	369.12	31.74
2011-12	57.32	1081.71	1049.82	88.21	37.60	484.13	477.62	44.11	36.83	522.89	530.25	29.47	31.74	332.30	335.25	28.65

2012-13	88.21	1357.00	1349.10	96.11	44.11	545.73	538.86	50.98	29.47	560.04	556.24	33.27	26.69	352.48	350.07	31.10
2013-14	96.11	1248.25	1274.10	70.26	50.98	574.18	563.44	61.72	33.27	536.04	518.84	50.47	31.10	243.18	236.36	37.32
2014-15	70.26	1091.24	1094.21	67.29	61.72	466.29	499.43	25.58	37.32	165.29	172.93	29.68	37.32	165.29	172.93	29.60

स्रोत :– वर्ष 2005–06 से 2014–15 तक के निगम के वार्षिक प्रतिवेदन

तालिका – 03

राजस्थान राज्य पथ परिवहन में भण्डार सामग्री

वर्ष	बैट्री				पेपर एवं कार्बन				आर.बी. पार्ट्स			
	प्रा.शेष	प्रप्तियां	उपभोग	अन्तिम शेष	प्रा.शेष	प्रप्तियां	उपभोग	अन्तिम शेष	प्रा.शेष	प्रप्तियां	उपभोग	अन्तिम शेष
2005-06	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-
2006-07	11.64	160.23	171.65	0.22	37.10	125.06	152.18	9.98	-	3.86	3.86	-
2007-08	0.22	316.96	311.76	05.42	9.98	148.10	127.68	30.40	-	6.52	6.52	-
2008-09	5.42	241.41	246.78	00.05	30.40	102.02	116.76	15.66	-	6.26	6.26	-
2009-10	0.05	233.03	225.85	07.23	15.86	129.58	127.40	17.84	-	6.73	6.73	-
2010-11	7.23	231.12	224.12	0.23	17.84	157.76	153.02	13.10	0.79	4.80	4.01	0.00
2011-12	0.23	284.84	285.07	00.00	13.10	183.61	176.07	20.64	0.00	5.05	4.77	0.28
2012-13	0.00	249.67	230.70	18.97	20.64	131.39	148.94	3.09	0.28	3.54	3.82	0.00
2013-14	18.97	239.88	233.27	25.58	3.09	200.78	201.63	2.24	0.00	3.12	2.33	0.79
2014-15	25.58	171.56	188.03	9.11	2.24	239.71	237.86	4.09	0.79	1.45	2.24	0.00

स्रोत :– वर्ष 2005–06 से 2014–15 तक के निगम के वार्षिक प्रतिवेदन

राजस्थान राज्य पथ परिवहन निगम में सामग्री नियन्त्रण के सम्बन्ध में ABC वर्गीकरण को अपनाया गया है, जिसके माध्यम से सामग्री निरूपण को सहज और प्रभावी बनाने का प्रयास किया गया है। निगम में ABC वर्गीकरण की कार्यप्रणाली के विश्लेषण के लिए निम्नलिखित तालिका द्वारा बताया जा सकता है।[14]

तालिका – 04

राजस्थान पथ परिवहन निगम में सामग्री नियन्त्रण का ABC विश्लेषण

मद	वार्षिक उपभोग प्रतिशत में	मदों की संख्या प्रतिशत में
A	75	09
B	20	19
C	05	72
कुल	**100**	**100**

उपरोक्त तालिका से स्पष्ट है कि निगम में A श्रेणी की सामग्री का प्रतिशत वार्षिक उपयोग के रूप में अधिक है। C श्रेणी की मदों की संख्या 72 प्रतिशत बताई गई है जो कि इस तथ्य को बताती है कि निगम में अनावश्यक का आधिक्य है जो कि निगम के घाटे का सबसे बड़ा उत्तरदायी कारण है। अतः निगम को सामग्री प्रबन्ध में ABC वर्गीकरण को प्रभावी ढंग से लागू करना चाहिए।[15]

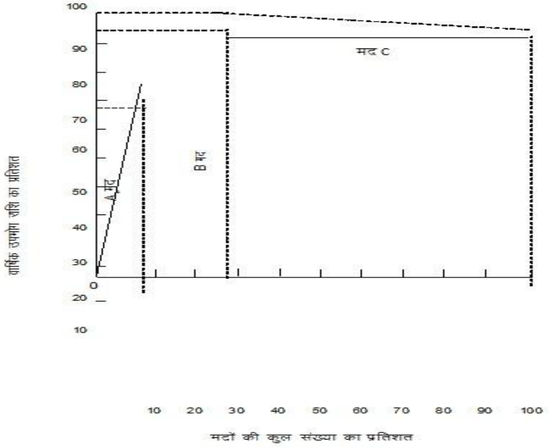

आर्थिक आदेश मात्रा

राजस्थान राज्य पथ परिवहन निगम में सामग्री नियन्त्रण के सम्बन्ध में व्यापारिक उपक्रमों की भांति आर्थिक आदेश मात्रा को अपनाने का प्रयास किया गया है। निगम में आर्थिक आदेश मात्रा का निर्धारण और अनुसरण करने से जहां एक तरफ रख रखाव लागतों में कमी आयी है तो वही दूसरी तरफ बार–बार आदेश देने की लागतें भी कम हुई हैं इतना ही नहीं आर्थिक आदेश मात्रा के निर्धारण से कार्यशील पूंजी का प्रभावी प्रयोग सम्भव हुआ है परन्तु निगम की क्रय प्रक्रिया निविदा पद्धति पर आधारित है जिसके कारण इस तकनीक को पूर्ण रूप से अपनाया जाना सम्भव नहीं हुआ है। अतः निगम में इस तकनीक के उपभोग पर ध्यान दिया जाना चाहिए।[16]

प्रमापीकरण

सामग्री नियन्त्रण के सम्बन्ध सामग्री प्रमापीकरण को अपनाने पर बल दिया गया है अर्थात् निगम में खरीदी जाने वाली प्रत्येक सामग्री निर्धारित प्रमाप के अनुसार होती है। निगम के द्वारा प्रमापीकरण के लिए आधुनिक तकनीक पर आधारित प्रमापों का विकास किया गया है जिसके कारण घटिया एवं अनावश्यक सामग्री का क्रय नहीं हो पाता है और साथ ही साथ निगम निर्धारित प्रमापों का पालन करके अच्छी किस्म की सामग्री का प्रयोग करने में सक्षम है। परन्तु वास्तव में देखने में आया है कि निगम द्वारा सामग्री क्रय के सम्बन्ध में निर्धारित प्रमापों का पूर्णतः पालन नहीं किया जाता है जिसके कारण निगम को अनावश्यक, घटिया और अवधि पार सामग्री प्राप्त होती है जो की घाटे का सबसे बड़ा कारण है।[17]

मूल्य विश्लेषण

सामग्री नियन्त्रण के सम्बन्ध में मूल्य विश्लेषण एक महत्वपूर्ण तकनीक मानी जाती है। यह तकनीक लागत नियन्त्रण सामग्री के अधिकतम प्रयोग और न्यूनतम छीजत को प्रोत्साहित करती है। इतना ही नहीं मूल्य विश्लेषण नामक तकनीक का प्रयोग निगम को सामग्री के अनवरत प्रयोग को प्रोत्साहित करता है।[18] राजस्थान राज्य पथ परिवहन निगम की कार्यप्रणाली में यह देखने में आया है कि मूल्य विश्लेषण नामक तकनीक को प्रभावी रूप में काम में लिया जा रहा है।

शोध कार्य के मुख्य अवलोकन

उपरोक्त विश्लेषण के आधार पर राजस्थान राज्य पथ परिवहन निगम के सामग्री नियन्त्रण के सम्बन्ध में निम्नलिखित तथ्य महत्वपूर्ण हैं :–

1. निगम के द्वारा सामग्री नियन्त्रण की जिन तकनीकों को अपनाया गया है वे तकनीक परम्परागत और दूषित है। अतः इन तकनीकों को आधुनिक सन्दर्भ में विकसित करना चाहिए[10]।
2. निगम के द्वारा सामग्री नियन्त्रण के लिए ।ठब् वर्गीकरण का अनुसरण किया गया है परन्तु मूल्य और उपयोग के आधार पर किया गया वर्गीकरण वर्तमान आवश्यकताओं के अनुरूप नहीं है, अतः इस वर्गीकरण को पुनः संशोधित करना आवश्यक है।
3. परिवहन निगम द्वारा आर्थिक आदेश मात्रा का निर्धारण पूर्ण रूप से नहीं किया गया है जिसके कारण आदेश लागत बढ़ती जा रही है अतः आर्थिक आदेश मात्रा का निर्धारण पूर्ण रूप से करना चाहिए।
4. परिवहन निगम द्वारा सामग्री खरीद की अधिकतम और न्यूनतम सीमा निर्धारित नहीं है जिसके कारण सामग्री आधिक्य और सामग्री अभाव की स्थिति देखने को मिलती है।
5. राजस्थान राज्य पथ परिवहन निगम के द्वारा सुरक्षा स्कन्ध पर कोई ध्यान नही दिया गया है जबकि सुरक्षा स्कन्ध सामग्री नियन्त्रण के लिए अति आवश्यक है। अतः निगम को सुरक्षा स्कन्ध का निर्धारण करना चाहिए।
6. परिवहन निगम के द्वारा आपूर्ति काल (lead time) का निर्धारण करने पर भी कोई ध्यान नहीं दिया गया है। जिसके कारण सामग्री प्राप्ति में विलम्ब की सम्भावना बनी रहती है। अतः आपूर्तिकाल समंक जपउम के निर्धारण और अनुसरण पर बल देना चाहिए।
7. राजस्थान राज्य पथ परिवहन निगम में सामग्री खरीद के अधिकारों का प्रत्यायोजन बहुत ही सीमित, पुरातन और राजनीतिक प्रेरित है अतः निगम को सामग्री खरीद के अधिकारों के प्रत्यायोजन का पुनः परीक्षण करना चाहिए।
8. सामग्री नियन्त्रण के सम्बन्ध में अनावश्यक सामग्री के निस्तारण (Disposal) की व्यवस्था का अभाव है अतः निगम में इस निस्तारण व्यवस्था को अधिक प्रभावी बनाना चाहिए।

राजस्थान राज्य पथ परिवहन निगम में सामग्री का भौतिक सत्यापन और अंकेक्षण की नियमित व्यवस्था नहीं है जिसके कारण सामग्री के गबन, चौरी, छीजत जैसी प्रवृतियां नियमित रूप से देखने को मिलती है अतः नियमित सामग्री भौतिक के सत्यापन को प्रोत्साहित करना चाहिए।

निष्कर्ष

इस प्रकार स्पष्ट है कि राजस्थान राज्य पथ परिवहन के नियमित और सफल संचालन में सामग्री प्रबन्ध और नियन्त्रण का महत्वपूर्ण स्थान है। निगम के द्वारा इस कार्य के लिए अलग से सामग्री नियन्त्रण प्रबन्ध की स्थापना की गई है तथा सामग्री नियन्त्रण के लिए विभिन्न नियन्त्रण तकनीकों को अपनाया गया है परन्तु विभिन्न संस्थागत और राजनैतिक कारणों से सामग्री नियन्त्रण के क्षेत्र में निगम को वांछनीय सफलता प्राप्त नहीं हुई है। अतः इस सन्दर्भ में निगम को अपेक्षित सुधारों के साथ भावी प्रगति को प्रोत्साहित करना चाहिए।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. *मांठ, विरेन्द्र सिंह, राजस्थान राज्य विद्युत निगम में सामग्री नियन्त्रण, शोध ग्रन्थ, राजस्थान विश्वविद्यालय जयपुर, 1992, पृष्ठ संख्या 222*
2. *मांठ, वी. एस. राजस्थान राज्य विद्युत निगम में सामग्री प्रबन्ध का अध्ययन,राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर, 1992, पृ.सं. 21–22*
3. *स्वामी, आर. एल., राजस्थान पथ परिवहन निगम में कार्यशील पूंजी का एक विश्लेषणात्मक अध्ययन,*

P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 VOL-5* ISSUE-3* November- 2017
E: ISSN NO.: 2349-980X **Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika**

सिंघानिया विश्वविद्यालय,पचेरी बड़ी (झुंझुनूं), 2006, पृ.सं. 122

4. *चौधरी, मधुलिका, भारतीय जीवन बीमा निगम में वित्त नियन्त्रण का एक विश्लेषणात्मक अध्ययन, राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर, 1999, पृ.सं. 40–41*
5. *नैनावत, बंशीधर, भारत में लोक उपक्रमों में संचालनात्मक कार्यकुशलता ''राजस्थान राज्य पथ परिवहन निगम का एक अध्ययन), राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर, 2004, पृ.सं. 113*
6. *कुन्डू, टी. आर., हरियाणा राज्य पथ परिवहन निगम में स्कन्ध नियन्त्रण का एक विश्लेषणात्मक अध्ययन, मितल बुक डिपु, भिवाड़ी, 2010, पृ.सं. 211*
7. *राठौड़, डी. एस. शोध ग्रन्थ, राजस्थान राज्य पथ परिवहन निगम में लागत नियन्त्रण का एक अध्ययन, राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर, 1993, पृ.सं. 205*
8. *सक्सेना, डॉ. राजीव कुमार शोध ग्रन्थ, मैट्रोसिटी यातायात समस्या (राजस्थान राज्य पथ परिवहन निगम का एक अध्ययन), रमेश बुक डिपो, जयपुर, 2011, पृ.सं. 112*
9. *शर्मा, महेश कुमार, राजस्थान में लोक सेवा उपक्रम में मानवीय संसाधन विकास (राजस्थान राज्य पथ परिवहन निगम का एक विशेष अध्ययन), राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर, 2004, पृ.सं. 66*
10. *अग्रवाल, एम.डी., वित्तीय प्रबन्ध के तत्व, आर.वी.डी. पब्लिकेशन, जयपुर, पृष्ठ संख्या 115*
11. *वार्षिक प्रतिवेदन :– वर्ष 2011 राजस्थान राज्य पथ परिवहन निगम, जयपुर, पृष्ठ संख्या 18*
12. *स्वामी, हरिराम, राजस्थान राज्य पथ परिवहन निगम–एम अध्ययन राजस्थान पत्रिका–20 दिसम्बर, 2013*
13. *वार्षिक प्रतिवेदन वर्ष 2012 राजस्थान राज्य पथ परिवहन निगम, जयपुर पृष्ठ संख्या 21*
14. *मांठ, विरेन्द्र सिंह, राजस्थान राज्य विद्युत निगम में सामग्री नियन्त्रण, शोध ग्रन्थ, राजस्थान विश्वविद्यालय जयपुर 1922, पृष्ठ संख्या 223*
15. *अग्रवाल, एम. आर. वित्तीय प्रबन्ध एवं प्रबन्ध लेखांकन मलिक बुक डिपो, जयपुर, पृष्ठ संख्या 240*
16. *दत्ता एवं सुन्दरम्, सामग्री नियन्त्रण, एस चांद एण्ड सन्स, नई दिल्ली, 1993, पृष्ठ संख्या 112*
17. *वार्षिक प्रतिवेदन 2014 – राजस्थान राज्य पथ परिवहन निगम जयपुर, पृष्ठ संख्या 19*